एनसीईआरटी

समाचार

अप्रैल 2008

बाल दृश्य - श्रव्य उत्सव

केन्द्रीय शैक्षिकी प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी)द्वारा दक्षिण एशिया फिल्म पैनोरामा का आयोजन 27 फरवरी से 2 मार्च 2008 के बीच 13वें अखिल भारतीय शैक्षिक दृश्य-श्रव्य उत्सव के भाग के रूप में नयी दिल्ली में किया गया। इस आयोजन में नेपाल, श्री लंका, बांगला देश, पाकिस्तान और भारत की फिल्में दिखाई गईं। दृश्य-श्रव्य उत्सव के लिए एसआईईटी, एनआईओएस, इग्नू, गैर सरकारी संगठनों और अन्य अभिकरणों से प्रतिस्पर्द्धी अनुभाग में 58 वीडियो और 18 ऑडियो कार्यक्रम प्राप्त किए गए तथा इनमें बच्चों के लिए शैक्षिक दृश्य-श्रव्य कार्यक्रमों को तैयार करने वाले व्यक्ति भी शामिल हुए। पहली बार अलग-अलग श्रेणियों के लिए नकद पुरस्कार घोषित किए गए। मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री, श्री एम. ए. ए. फातिमी ने उत्सव का उद्घाटन किया।

दो वीडियो संक्षिप्त फिल्में-जिंदगी एक कविता, जो पंजाबी कवयित्री और उपन्यासकार, अमृता प्रीतम के जीवन पर आधारित है और 'अजीब आदमी था वह' जाने-माने उर्दू कवि और गीतकार कैफी आज़मी के जीवन पर आधाारित है, जारी की गईं। इन संक्षिप्त फिल्मों का लेखन और निर्देशन श्री ए ए खान अफरीदी ने किया है। श्री अजीत होरो द्वारा निर्मित स्वाधीनता का संग्राम नामक कार्यक्रम भी दिखाया गया, जिसे जानी मानी स्वतंत्रता सेनानी, श्रीमती सीता बिम्ब्रा ने गाया। श्रीमती बिम्ब्रा ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक, प्रोफेसर कृष्ण कुमार ने कहा कि बच्चों को स्वयं अनुभव के लिए फिल्म, रेडियो, कंप्यूटर और इंटरनेट जैसे विभिन्न मीडिया का उपयोग करने का प्रोत्साहन दिया जाए। इस उत्सव से दृश्य और श्रव्य माध्यमों के निर्माता, अनुसंधानकर्ता, लेखक, कैमरा चलाने वाले व्यक्ति, संपादक और अन्य

विद्या से अमरत्व
प्राप्त होता है।

विद्यया ऽ मृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं :
(i) अनुसंधान और विकास,
(ii) प्रशिक्षण तथा (iii) विस्तार।
यह डिज़ाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर ज़िले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों में प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।

उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है–
विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

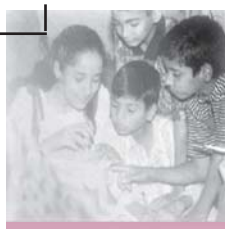

तकनीकी कर्मी, शिक्षाविद तथा फिल्म निर्माता आदि सभी अपने अनुभवों और विचारों को आपस में बांटने के लिए एक ही मंच पर आए। उत्सव के अलग-अलग सत्रों की अध्यक्षता वरिष्ठ शिक्षाविदों तथा फिल्म निर्माताओं ने की। इन सत्रों के दौरान सभी एस.आई.ई.टी. के वरिष्ठ निर्माताओं और तकनीकी कर्मियों, एनआईओएस के अध्यक्ष और एसआईईटी, केरल के निदेशक तथा परिषद के अन्य विभिन्न शिक्षाविद उपस्थित थे।

एक जाने माने फिल्म निर्माता और पूर्व प्रधानाचार्य, सीईपी, प्रोफेसर विजया मुलय की अध्यक्षता में एक जूरी ने दृश्य और श्रव्य के लिए सर्वोत्तम निर्देशन निर्माण में उत्कृष्टता के लिए दृश्य तथा श्रव्य दोनों में, सर्वोत्तम कैमरा कार्य, सर्वोत्तम पटकथा दृश्य और श्रव्य, सर्वोत्तम वीडियो संपादक, सर्वोत्तम ध्वनि रिकॉर्डिंग श्रव्य, सर्वोत्तम सैट डिजाइन और सर्वोत्तम छात्र निर्माण के कार्यक्रम चुने। युवा प्रतिभाओं को प्रेरित करने के लिए पहली बार ''सर्वोत्तम छात्र द्वारा निर्माण'' भी आरंभ किया गया।

श्री ए के बी मेनन, फिल्म निर्देशक और उनके दल ने नेटवर्क के सभी नोड पर एडुसैट की सभी घटनाओं का प्रसारण किया। दक्षिण एशियाई देशों के फिल्म पैनोरामा का प्रदर्शन 2 मार्च को किया गया। जाने माने अभिनेता, लेखक, निर्देशक और निर्माता श्री अमोल पालेकर ने विजेताओं को पुरस्कार दिए। अपने प्रारंभिक संबोधन में उन्होंने कहा कि बच्चों को फिल्म बनाने की तकनीक में बढ़ावा और प्रेरणा दी जाए और उनका पोषण किया जाए। इस महोत्सव में और सी. आई.ई.टी. की अग्रणी रहीं प्रोफेसर विजय मुलय को एक पुरस्कार दिया गया।

गोष्ठियां और कार्यशालाएं

एडुसैट के माध्यम से जेंडर संवेदीकरण

महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.) ने 28,30 जनवरी और 1 फरवरी 2008 को सीआईईटी के एडुसैट के माध्यम से अभ्यासरत स्कूली अध्यापकों के लिए तीन दिनों के एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया।

भारत के 22 राज्यों से 25 प्रसारण केंद्रों पर केंद्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों और सी.बी.एस.ई. तथा राज्य मंडलों के साथ संबद्ध लगभग 800 अध्यापकों ने विशेषज्ञों के साथ बातचीत की, जिसमें एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक प्रोफेसर कृष्ण कुमार, प्रोफेसर पूनम अग्रवाल, विभागाध्यक्ष महिला अध्ययन विभाग और एन.सी. ई.आर.टी. के अन्य विभागों के संकाय शामिल थे।

इसमें शामिल विषय-वस्तुएं थीं। एन.सी.एफ. 2005 के संदर्भ में शिक्षा और अन्य पाठ्यक्रम संबंधी क्षेत्र और स्कूलों में जेंडर संवेदनशीलता विकसित करने की कार्यनीतियां और स्त्री संबंधी रूढ़ियों और मान्यताओं के विषय में पूर्व निर्धारित मनोवृत्तियों की समीक्षा की आवश्यकता। इस पर बल दिया गया कि जेंडर केवल महिलाओं का मुद्दा नहीं है बल्कि यह जन-साधारण का मुद्दा है। सीखने की प्रक्रिया को सुसाध्य बनाने की भूमिका में अध्यापक बालिकाओं में जागरूकता, विश्लेषण कौशलों और सशक्तिकरण के विकास में सकारात्मक भेदभाव प्रदान कर सकते हैं। कार्यक्रम का समन्वयन एवं संचालन डा. नीरजा रश्मि ने किया।

विस्तार व्याख्यान शृंखला

प्रोफेसर मृणाल मिरी द्वारा विस्तार व्याख्यान शृंखला के तहत क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भोपाल में 12 मार्च 2008 को एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रोफेसर मृणाल मिरी, पूर्व उपकुलपति, नेहू, शिलांग ने शिक्षा और नैतिकता पर व्याख्यान दिया। प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने सत्र की अध्यक्षता की। प्रोफेसर ए. बी. सक्सेना, प्रधानाचार्य, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भोपाल ने अतिथियों का स्वागत किया और सदन से वक्ता का परिचय कराया।

क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, पी.एस.एस.सी.आई.वी., विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग, भोपाल के बी. एड. कॉलेज के संकाय सदस्य तथा क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान के वरिष्ठ और सेवानिवृत्त संकाय सदस्यों के साथ संस्थान के अन्य प्रतिष्ठित सदस्यों ने सत्र में भाग लिया।

पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों का संशोधन

पाठ्यक्रम सुधार के लिए राज्य सहायता कार्यक्रम के तहत लगभग सभी राज्य / संघ राज्य क्षेत्र एन.सी.एफ.-2005 के प्रकाश में अपनी पाठ्यचर्याओं की समीक्षा और संशोधन करने की प्रक्रिया में हैं। 15 राज्यों ने अपनी मौजूदा पाठ्यचर्याओं की समीक्षा और संशोधन किया है। एन.सी.ई.आर.टी. की

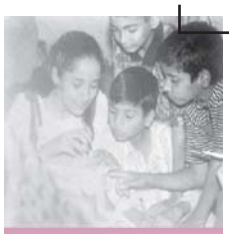

पाठ्यचर्या समिति और राज्यों के पाठ्यचर्या विकास समूहों के बीच गणित विषय के लिए 5-6 जनवरी 2008 को और 7-8 मार्च 2008 को विज्ञान तथा ई.वी.एस. विषय के लिए अन्योन्य क्रियात्मक कार्यशाला का आयोजन एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली में किया गया।

इस अंत:क्रियात्मक कार्यशाला का दोहरा लाभ हुआ, इससे राज्य पाठ्यचर्या विकास समूहों को यह समझने में सहायता मिली कि एन.सी.एफ.-2005 किस प्रकार पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों में अनूदित किया गया है; इससे एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यचर्या समितियों को राज्य का दृष्टिकोण समझने में और उस प्रक्रिया को जानने में सहायता मिली जिससे राज्य की पाठ्यचर्याओं का विकास किया गया है। राज्य पाठ्यचर्याओं पर प्राप्त फीडबैक राज्यों को दिया गया, जिसे पाठ्यपुस्तकों में शामिल किया जा सके।

संगठनों के नेटवर्क का अनुवर्तन

महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.) द्वारा 11-14 मार्च 2008 के बीच बालिका शिक्षा, क्षमता निर्माण और सशक्तीकरण पर कार्यरत संगठनों के लिए डी.डब्ल्यू.एस. द्वारा स्थापित नेटवर्क के अनुवर्ती कार्यक्रम के रूप में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके उद्देश्य नेटवर्क को अद्यतन बनाना और कार्य योजना के कार्यान्वयन हेतु राज्यों की समीक्षा करना थे। यह निर्णय लिया गया कि नोडल केंद्र (डी.डब्ल्यू.एस.) 15 भागीदार संगठनों को शैक्षिक सहायता प्रदान करेंगे जो अपने-अपने स्थानों पर किशोर बालिकाओं के लिए स्कूलों में प्रतिभागिता में बाधक कारकों पर सर्वेक्षण करेंगे।

पाठ्यचर्या विश्लेषण प्रशिक्षण

पाठ्यचर्या समूह में 13 फरवरी 2008 से 3 मार्च 2008 तक और 27-31 मार्च 2008 के बीच एन.सी.ई.आर.टी., नयी

दिल्ली में 'पाठ्यचर्या विश्लेषण और विकास' पर दो चरणों में एक माह का पाठ्यक्रम आयोजित किया गया।

आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और केरल के जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों के बीस प्रारंभिक अध्यापक प्राध्यापकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

एक कार्यशाला के रूप में आयोजित इस कार्यक्रम का लक्ष्य पाठ्यचर्या विश्लेषण और विकास में शैक्षिक चुनौतियों को संबोधित करने के लिए पाठ्यचर्या नेतृत्व का पोषण और सुदृढ़ीकरण करना है। राष्ट्रीय विषय निर्वाचन समितियों और एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों में प्रतिभागियों को आवश्यक शैक्षिक निवेश प्रदान किया।

एडुसैट नेटवर्क के माध्यम से अभिविन्यास

पाठ्यचर्या समूह द्वारा एस.सी.ई.आर.टी., डी.आई.ई.टी., सी.टी.ई. और आई.ए.एस.ई. के अध्यापक प्राध्यापकों के लिए एन.सी.एफ.-2005 पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम 4-10 मार्च 2008 के बीच सी.आई.ई.टी. के एडुसैट नेटवर्क के माध्यम से आयोजित किया गया। देश भर के लगभग 1000 प्रारंभिक और माध्यमिक स्तर के अध्यापक प्राध्यापकों ने इस में भाग लिया। राष्ट्रीय विषय निर्वाचन समिति, राष्ट्रीय फोकस समूह और एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों ने पाठ्यक्रम संबंधी क्षेत्रों, राष्ट्रीय चिंताओं और व्यवस्थागत सुधारों से संबंधित मुख्य विचारों पर विभिन्न अधिगम केंद्रों पर उपस्थित प्रतिभागियों के साथ बातचीत की। द्विमार्गी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए अध्यापक प्राध्यापक 14 अधिगम केंद्रों में राष्ट्रीय स्तर के विशेषज्ञों और उनके सहयोगियों के साथ एक साथ बात कर सके। प्रतिभागियों की पूछताछ वास्तविक परिस्थितियों में एन.सी.एफ. - 2005 के विचारों की व्यवहारिकता पर केंद्रित रही। अधिकांश प्रश्न भाषा शिक्षण, परीक्षाओं, अध्यापक शिक्षा और रचनात्मकता के क्षेत्रों में थे।

प्रौद्योगिकियों के संकेन्द्रण पर राष्ट्रीय परामर्श

सी.आई.ई.टी. में 18-19 फरवरी 2008 के दौरान शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकियों के संकेन्द्रण पर एक दो-दिवसीय राष्ट्रीय परामर्श का आयोजन किया गया। प्रोफेसर कृष्ण कुमार ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। शिक्षा प्रौद्योगिकीविद और पूर्व एन.सी.ई.आर.टी. प्रोफेसर एस एस कुलकर्णी मुख्य अतिथि थे।

यह कार्यक्रम अनेक प्रकार की प्रौद्योगिकियों पर केंद्रित रहा, जो हाल के वर्षों में उभर कर आई हैं, विशेष रूप से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तथा मोबाइल प्रौद्योगिकी और शिक्षा की पहुंच तथा गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए इसके योगदान की अपार संभावनाएँ।

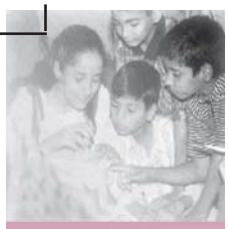

कार्य सत्रों के दौरान विभिन्न विशेषज्ञों ने शिक्षण तथा प्रशिक्षण के क्षेत्र में प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने के अपने

अनुभव बांटे। प्रोफेसर विजय मुलय ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की, जबकि प्रोफेसर एम एम चौधरी, पूर्व संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. और प्रोफेसर उषा रेड्डी, निदेशक प्रशासनिक कर्मचारी महाविद्यालय, हैदराबाद ने टेलीविजन और नई प्रौद्योगिकियों के उपयोग से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। इसमें शामिल अन्य विषय थे आई.सी.टी. के माध्यम से बच्चे को सिखाने के लिए नए प्रयोग, शिक्षण - अधिगम्यता को और अधिक व्यक्तिगत बनाने में उपग्रह दूरदर्शन का उपयोग तथा शिक्षा में आई.सी.टी. के उपयोग पर विचार, रेडियो और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, बच्चों को सिखाने में रेडियो का उपयोग, मुक्त स्रोत वाले सॉफ्टवेयर का उपयोग तथा बच्चों और अध्यापकों द्वारा ज्ञान के सृजन तथा आपस में बांटने की दिशा में आई.सी.टी. का उपयोग।

अंतिम सत्र में उभरती हुई अनेक नई सस्ती प्रौद्योगिकियों और सीखने की कार्यनीतियों पर प्रकाश डाला गया, जैसे, खुले शैक्षिक संसाधनों (ओ.ई.आर.) का महत्व तथा आई-कंसेटे (एन इंडियन कंसोर्टियम फॉर एडूकेशनल ट्रान्सफारमेशन) द्वारा बी-एड कार्यक्रम का विकास।

श्री खुंटिया, संयुक्त सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने अपने समापन उद्‌बोधन में शिक्षा के तहत आई.सी.टी. की भूमिका पर बल दिया। सी.आई.ई.टी. संकाय तथा विशेषज्ञों ने अगले 5 वर्षों के लिए अपनी संभावित योजना के विकास के लिए कार्य बिन्दुओं पर चर्चा की।

ई.सी.सी.ई. पर समर्थन हेतु राष्ट्रीय गोष्ठी

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डीईई) द्वारा एक तीन-दिवसीय राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन 29 से 31 जनवरी 2008 के बीच सभी पणधारियों को चर्चा हेतु एक मंच प्रदान करने के लिए किया गया, जहां वे प्रारंभिक बाल्यावस्था परिचर्या तथा शिक्षा के क्षेत्र में अपने अनुभवों को बांट सकें।

विषयवस्तुएं

- सशक्त आधार - प्रारंभिक बाल्यावस्था परिचर्या और शिक्षा, ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट 2007, यूनेस्को, एजुकेशन फॉर ऑल
- आई.सी.डी.एस. की चुनौतियां और आगे का मार्ग
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2005 के प्रकाश में ई.सी.सी.ई. पर फोकस समूह रिपोर्ट, ई.सी.सी.ई. के मार्गदर्शी सिद्धांत

डॉ. पी के भट्टाचार्य ने एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा शालापूर्व बच्चों के लिए विकसित अनिवार्य प्ले-किट प्रदर्शित किया।

डॉ. शोभना वैद्यनाथ, हैदराबाद ने मॉन्टेसरी अधिगम्यता उपकरणों का प्रदर्शन किया। इस गोष्ठी में डी.आई.ई.टी., निपसिड, एम.सी.डी., एस.सी.ई.आर.टी., गैर सरकारी संगठनों, अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों जैसे विभिन्न संगठनों से 59 प्रतिभागियों ने भाग लिया। ई.सी.सी.ई. के विभिन्न मुद्दों पर 17 शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए।

गोष्ठी की प्रमुख सिफारिशें ई.सी.सी.ई. पर राष्ट्रीय फोकस समूह रिपोर्ट में दी गई सिफारिशों के अनुरूप थीं। ई.सी.सी.ई. पैकेज के विकास में मुद्रण, दृश्य और श्रव्य सामग्रियां शामिल होनी चाहिए। प्रारंभिक बाल्यावस्था परिचर्या और शिक्षा के साथ प्राथमिक शिक्षा का सह-संबंध नीति और कार्यक्रमों में विकसित किया जाए, ताकि पूर्व प्राथमिक से प्राथमिक चरणों की ओर आगमन सुचारु हो सके।

परामर्शी कार्यशाला

विशेष आवश्यकता शिक्षा समूह विभाग ने ''अनुसूचित जाति के बच्चों के विशेष संदर्भ में ग्रामीण भारत में स्कूली शिक्षा पर राष्ट्रीय सम्मेलन'' नामक एक परियोजना ली है, जिसके तहत जीवन दीप महिला महाविद्यालय, वाराणसी में 29-31 जनवरी 2008 के बीच एक तीन-दिवसीय परामर्शी कार्यशाला का आयोजन किया गया था। अनुसूचित जाति उत्तर भारत के उन जिलों में जहाँ के लिए कार्यक्रम सह संचालित है, कार्यरत 16 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। विभिन्न प्रतिष्ठित शिक्षाविदों ने अलग-अलग मुद्दों पर प्रकाश डाला जैसे कि शिक्षा विज्ञान, स्कूल प्रबंधन और

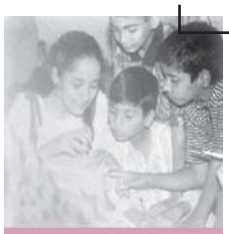

प्रशासन, नामांकन, शैक्षिक उपलब्धि, अनुसूचित जातियों के बच्चों को स्कूलों में बनाए रखना, संवैधानिक प्रावधान और स्कूली शिक्षा के गुणात्मक पक्ष आदि। इस कार्यक्रम का निर्देशन प्रोफेसर नीरजा शुक्ला, प्रमुख, डी.ई.जी.एस. एन. ने किया। वर्ष के अंत तक एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने की योजना है।

परीक्षा सुधारों पर राष्ट्रीय सम्मेलन

जुलाई-अगस्त 2007 के दौरान 4 क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किए गए, जिसके बाद 14-16 नवंबर 2007 के बीच विद्यालयी शिक्षा मंडलों के अध्यक्षों का एक तीन-दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन किया गया। विद्यालयी शिक्षा के 18 मंडलों का प्रतिनिधित्व करने वाले 36 प्रतिभागियों ने लोक परीक्षाओं में परीक्षा सुधारों पर एन.सी.एफ.-2005 की सिफारिशों पर चर्चा की। परीक्षा के आयोजन से पहले, आयोजन के दौरान, बाद में तथा पणधारियों को प्रेरित करने से संबंधित लोक परीक्षाओं में सुधार लाने पर महत्त्वपूर्ण सिफारिशें की गईं। इस सम्मेलन की रिपोर्ट मंडलों से फीडबैक प्राप्त करने के लिए तैयार की गई है।

रचनात्मकता पर राष्ट्रीय सम्मेलन

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में 12-14 मार्च 2008 के बीच एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया जिसका विषय था 'शिक्षा में रचनात्मकता'। अपने उद्घाटन संबोधन में प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने रचनात्मकता की संकल्पना और कक्षा में शिक्षण के साथ इसके समेकन पर रचनात्मकता में अध्यापक की भूमिका पर प्रकाश डालते

हुए चर्चा की। इस गोष्ठी में देश भर के 108 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

शिक्षा के क्षेत्र में जानी मानी हस्तियों ने विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता की तथा विभिन्न सत्रों को संबोधित किया। विभिन्न सत्रों के प्रतिभागियों और अध्यक्षों के विचारों पर गहराई से चर्चा की गई और शिक्षक प्रशिक्षण तथा शिक्षण-अधिगम्यता में रचनात्मकता लाने की कार्यनीतियों की पहचान की गई।

प्रमुख मुद्दे और सिफारिशें

- रचनात्मकता को उचित परिप्रेक्ष्य में समझा जाए।
- सभी छात्रों के लिए कक्षाकक्ष में एक समावेशी वातावरण बनाया जाए।
- संगीत, नृत्य, गीत आदि के महत्त्व की आवश्यकता का पुनः आकलन किया जाए।
- भाषा शिक्षा को केवल भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं रखा जाए।
- उन क्षेत्रों को अस्वीकार करने की मानसिकता, जिन्हें अंकों के जरिए जांचा नहीं जा सकता, छोड़ दी जाए।
- ज्ञान आपस में संबंधित और समेकित होना चाहिए, विखंडित नहीं।
- बच्चों को सोचने का प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
- नए मुद्दों और समस्याओं से निपटने के लिए अन्य विधियों की खोज की जाए।
- ज्ञान का लक्ष्य दुनिया से जोड़ना होना चाहिए। शिक्षा को संदर्भयुक्त होना चाहिए।

प्रोफेसर जी. रविन्द्र, संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने शिक्षा के क्षेत्र में रचनात्मकता लाने पर अपने विचारों के साथ समापन-सत्र को संबोधित किया।

विदेश यात्राएं

सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा पर मंच

डॉ. ए. बी. सक्सेना, प्रधानाचार्य ने पर्थ, ऑस्ट्रेलिया में 19-20 फरवरी 2008 के बीच यूनेस्को द्वारा प्रायोजित प्रथम एशिया प्रशांत शिक्षा संकाय अध्यक्ष मंच में भाग लिया। यह मंच सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा में सर्वोत्तम प्रथाओं और मुद्दों की चर्चा करने और उन्हें आपस में बांटने तथा अन्य संलग्न अध्यापक शिक्षा संस्थानों की भविष्य दृष्टि पर विचार और अध्यापक शिक्षा संस्थानों की क्षमता निर्मित करने के लिए एक नेटवर्क के विकास पर केंद्रित था।

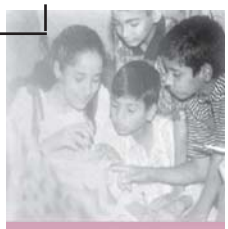

पुस्तकें

प्रो. मुहम्मद नाउमान खान, भाषा विभाग, एनसीईआरटी ने मार्च 2008 में एक पुस्तक सरमाया-1-अदब का प्रकाशन किया। यह पुस्तक जाने माने उर्दू लेखक और विद्वान प्रो. ए क्यू देसनावी के प्रकाशनों की सूची है।

इसके अतिरिक्त प्रो. एम नाउमान खान ने 2008 में तफहीम-ओ-तसूर नामक एक एंथोलॉजी का प्रकाशन किया है।

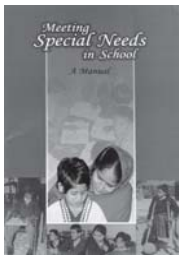

समावेशी शिक्षा से सभी बच्चों, युवाओं और वयस्कों की सीखने की आवश्यकताओं को संबोधित किया जा सकता है और इसमें उन पर विशेष फोकस होता है जो संवेदनशील तथा उपेक्षित और निष्कासन से पीड़ित हैं। विशेष आवश्यकता शिक्षा समूह विभाग (डीईजीईएसएन) ने उन व्यक्तियों के लिए एक समावेशी शिक्षा मार्गदर्शन पर यह मेनुअल तैयार किया है जो नि:शक्त बच्चों को और युवाओं को सामान्य शिक्षा की धारा में लाने के लिए प्रभावी रूप से प्रयासरत हैं। डॉ. अनीता जुलका द्वारा लिखित यह पुस्तक विशेष रूप से स्थानीय सरकारी अधिकारियों, विभिन्न स्कूलों के प्रमुखों, अध्यापकों और अध्यापक अध्यापकों, अभिभावकों के अलावा अन्य व्यक्तियों के लिए भी विशेष रूप से सार्थक है। इस पुस्तक में पांच अध्याय हैं, जिसमें प्रत्येक में समावेशी शिक्षा के भिन्न किन्तु संगत पक्षों की रूपरेखा दी गई है।

भारतीय महिलाओं के योगदान 1857-1947

महिला अध्ययन विभाग, एनसीईआरटी ने सेंटर फॉर विमेन्स डेवलपमेंट स्टीडीज़ और क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान शिलॉन्ग और भुवनेश्वर के सहयोग से क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान शिलॉन्ग के पास सेंट मेरी कॉलेज में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया (19-20 फरवरी 2009)। इस प्रदर्शनी का शीर्षक था ''ए विजुअल डॉक्यूमेंटरी'', जिसमें भारतीय इतिहास की आधुनिक अवधि के कुछ दुर्लभ साक्ष्य प्रस्तुत किए गए थे जो राष्ट्रीय आंदोलन, सामाजिक सुधार और शिक्षा के विकास में महिलाओं की भागीदारी पर प्रकाश डालते हैं। इन प्रदर्शनियों का उद्घाटन पद्म श्री विजेता डॉ. हेलन गिरी (शिलॉन्ग) और कुमकुम मोहंती (भुवनेश्वर में) ने किया। इन प्रदर्शनियों को बड़ी संख्या में छात्रों, अध्यापकों और जनता ने देखा।

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

- आर. मेघनाथन, व्याख्याता, भाषा विभाग ने 8 से 10 फरवरी 2008 के दौरान चेन्नई में आयोजित तीसरे अंतरराष्ट्रीय एवं 39वें वार्षिक ईएलटीएआई सम्मेलन में 'मटिरियल डेवलपमेंट इन इंग्लिश एज़ ए सेकंड लेंग्वेज : टीचर्स' नामक एक अनुसंधान पत्र प्रस्तुत किया। इस सम्मेलन की विषय-वस्तु की 'पढ़ाने के लिए सीखना - जीवनभर लंबी यात्रा'। यह शोध पत्र अध्यापक की ज़रूरतों, उनकी ताज़ा पाठ्यक्रम संशोधन के अनुभवों से कक्षाकक्ष मेलजोल के लिए सामग्री और निहितार्थों के विकास पर उनकी भागीदारी पर केंद्रित रहा। उन्होंने ईएलटी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'भाषा शिक्षा विज्ञान पर राष्ट्रीय गोष्ठी में अंग्रेज़ी को एक द्वितीय भाषा के लिए शिक्षा विज्ञान और सामग्री' पर भी एक शोध पत्र प्रस्तुत किया। दसवीं कक्षा की तीन पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण इस शोध पत्र में किया गया है और सामग्रियों में सामान्य रूप से सीखने की समझ और भाषा अभिग्रहण की शिक्षा वैज्ञानिक समझ को साकार किया गया है।
- डॉ. वीर पाल सिंह, प्राध्यापक, डी.ई.एम.ई. ने यू.जी.सी. प्रायोजित विशेष उपस्थिति कार्यक्रम में भाग लिया जिसका आयोजन शिक्षा विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र द्वारा ''प्रारंभिक शिक्षा में गुणवत्ता आश्वासन - संकल्पना और मुद्दे'' पर विशेष सहायता कार्यक्रम के रूप में 30-31 मार्च 2008 के बीच किया गया था और इसमें ''निरंतर और व्यापक मूल्यांकन के जरिए प्रारंभिक शिक्षा में गुणवत्ता का आश्वासन'' पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया गया। उन्होंने जनरल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एण्ड रिसर्च में ''स्कूली छात्रों की मूल्य वरीयता पर शिक्षण के न्याय शास्त्र मॉडल का प्रभाव'' पर एक अनुसंधान पत्र प्रकाशित किया। मार्च 2008, 25(1), 3-33

हिंदी अध्यापकों के लिए अभिविन्यास

सी.बी.एस.ई., नवोदय विद्यालयों और केंद्रीय विद्यालयों से आए 25 अध्यापकों ने माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के लिए एक कार्यक्रम में भाग लिया जो अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति बहुलता वाले राज्यों में प्रथम और द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण करते हैं। इसका आयोजन एन.आई.ई. परिसर में भाषा विभाग द्वारा 7 से 11 जनवरी 2008 के बीच किया गया। इस कार्यक्रम में एन.सी.एफ. 2005 के मुद्दों पर बल दिया गया और उन्हें अभिमुख किया गया कि वे नई पाठ्यपुस्तकों को किस प्रकार पढ़ाएं कि बच्चे अपने ज्ञान के साथ इसे जोड़ सकें और रचनात्मकता तथा समग्र मानव मूल्यों का विकास कर सकें। इस कार्यक्रम का सह समन्वय डॉ. स्नेह लता प्रसाद, प्राध्यापक, हिंदी द्वारा किया गया।

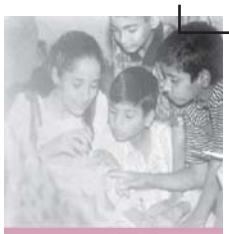

भाषा और उसके परे

सआदत हसन मंटो पर राष्ट्रीय गोष्ठी

एक जाने माने उर्दू लघु कथा लेखक सआदत हसन मंटो पर एक दो-दिवसीय राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा 29-30 मार्च 2008 के बीच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर ए बी सक्सेना, प्रधानाचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने की। प्रमुख उद्बोधन दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अतिकुल्ला ने दिया। इसका उद्घाटन जाने माने उर्दू लघु कथाकार श्री इकबार मजिद ने किया। इस सत्र में लगभग 18 विशेषज्ञों, 32 उर्दू अध्यापकों और एन.सी.ई.आर.टी. के 6 संकाय सदस्यों ने भाग लेकर मंटो के लेखन के विभिन्न पक्षों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए। डॉ. डी एच खान ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

आर के नारायण पर राष्ट्रीय सेमिनार

भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, मैसूर में 26 से 28 फरवरी, 2008 के बीच आर के नारायण के विचारों में बच्चे और परिवार पर एक तीन-दिवसीय राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें अध्यापकों, शिक्षाविदों, गैर सरकारी संगठनों, साहित्यकारों, अनुसंधानकर्ताओं और राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग के सदस्यों ने भाग लिया।

इस गोष्ठी का उद्घाटन प्रोफेसर जी टी भंडगे, प्रधानाचार्य, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, मैसूर ने किया और इसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग की अध्यक्ष प्रोफेसर शांता सिन्हा ने की। अपने उद्घाटन संबोधन में प्रोफेसर भंडगे ने आर के नारायण के जीवन और कार्य के बारे में बताया और कहा कि किस प्रकार उनका प्रथम भाषण बच्चों को आघात और तनाव से बचाने की तत्काल आवश्यकता पर केंद्रित था, जिसके परिणामस्वरूप सीखने की विधियों पर प्रभाव पड़ता है और स्कूल आने-जाने की प्रक्रिया एक बोझ बन जाती है। प्रोफेसर भडंगे ने प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट आर के लक्ष्मण का उल्लेख किया जो इस भार की समस्या के बारे में शिक्षा के विभिन्न पणधारियों को अवगत कराते रहे हैं।

इस गोष्ठी में आर के नारायण के कार्यों और ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों की शिक्षा, कक्षाकक्ष प्रक्रिया और हमारे भविष्य के बच्चों की शिक्षा के लिए योजना जैसी विषय-वस्तुओं पर प्रस्तुतीकरण और वाद-विवाद किए गए। डॉ. संतोष महरोत्रा, सदस्य, योजना आयोग, भारत सरकार, डॉ. भानुमती, लेडी इरविन कॉलेज, दिल्ली, केंद्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों समिति के अध्यापकों, जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान के सदस्यों, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थानों के संकाय सदस्यों और भाषा विभाग, एन.आई.ई., दिल्ली के सदस्यों ने इस गोष्ठी में भाग लिया।

प्रोफेसर बी एस राघवेन्द्र, संकाय अध्यक्ष अनुदेश विभाग, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, मैसूर ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। आर मेघनाथन ने गोष्ठी का समन्वय किया और धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

प्रोफेसर शांता सिन्हा का भाषण

प्रोफेसर शांता सिन्हा, अध्यक्षा, राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग (एन.सी.सी.आर.) ने बाल श्रम, बाल अधिकारों और शिक्षा पर उद्बोधन दिया। बच्चों को वंचित समूहों से स्कूल तक लाने में अपने अनुभवों से दृष्टांत लेकर उन्होंने बाल श्रम और शिक्षा के अधिकार, सस्ते श्रम की बाज़ार मांग के साथ सभी प्रकार के श्रम युक्त कार्यों में बच्चों को अमानवीय परिस्थितियों में डालने तथा अभिभावकों, यहां तक कि गरीब माता-पिता द्वारा भी शिक्षा की बढ़ती मांग पर जानकारी दी। उन्होंने अध्यापकों, शिक्षाविदों और अन्य व्यक्तियों को बालश्रम के प्रति संवेदनशील होने की प्रेरणा दी और अनुरोध किया कि बाल श्रम की किसी भी घटना और बच्चों को पढ़ाई से वंचित रखने और सम्मानजनक जीवन से दूर रखने की जानकारी को सामने लाया जाना चाहिए।

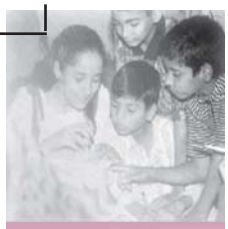

क्षमता निर्माण कार्यक्रम

पूर्वोत्तर जनजातीय भाषाओं पर कार्यशाला

गैंगटोक, सिक्किम में पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, शिलॉन्ग द्वारा 'पूर्वोत्तर राज्यों की जनजातीय / अल्पसंख्यक भाषाओं में बच्चों की शब्दावली / मूलभूत मेनुअल का विकास' पर एक चार-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन राज्य शिक्षा संस्थान, सिक्किम और मानव संसाधन विकास विभाग, सिक्किम सरकार के सहयोग से किया गया। इसकी समन्वयक सुश्री एम. जी. वालांग, पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान हैं। माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री गरजनाम गुरूंग उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे। संसाधन व्यक्तियों में प्रोफेसर ए. के मिश्रा, सुश्री एम. जी. वालांग, डॉ. एस देवी, डॉ. के. इंदिरा (एन.ई.आर.आई.ई. शिलॉन्ग) और डॉ. एल चौवांगथू, उप निदेशक एस.सी.ई. आर.टी., मिजोरम शामिल थे। इस कार्यशाला में एस.सी.ई. आर.टी., एस.आई.ई., डी.आई.ई.टी., मेघालय, मिजोरम और सिक्किम से आए 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पूर्वोत्तर राज्यों (मेघालय, मिजोरम और सिक्किम) की जनजातीय भाषाओं में मूलभूत मैनुअल / बच्चों की शब्दावली का विकास करना था। कई बार 'वयस्क शब्दावली' अर्थात ऐसे शब्द जिनसे बच्चों की दुनिया अपरिचित है, आम तौर पर बच्चों की पाठ्यपुस्तकों में शामिल किए जाते हैं। इससे बच्चों को पाठ समझने में कठिनाई होती है। इसके अलावा स्कूल की भाषा और बच्चे के घर की भाषा में आम तौर पर अंतर होता है, क्योंकि बहुत-सी अल्प संख्यक भाषाओं को अभी स्कूल की पाठ्यचर्या में लाने का कार्य अभी बाकी है। यह समस्या तब और गंभीर हो जाती है जब सामान्यतया अध्यापक प्रमुख भाषा या स्कूल की भाषा में बोलते हैं। अत: आशा व्यक्त की गई थी कि इस मैनुअल के विकास के साथ अध्यापक अपनी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाने में सक्षम होंगे।

स्थानीय ज्ञान पर कार्यशाला एक जारी अनुसंधान के भाग के रूप में

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मणिपुर में पाठ्यपुस्तकों के लेखन में स्थानीय ज्ञान को शामिल करने पर शैक्षिक विशेषज्ञों के महत्त्वपूर्ण विचारों और टिप्पणियों का लाभ उठाने के लिए 9-11 फरवरी 2008 के बीच ''स्थानीय ज्ञान के संदर्भ में मणिपुर के माध्यमिक शिक्षा मण्डल की प्राथमिक स्तर की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों का एक विश्लेषण'' नामक एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में लगभग 25 लोगों ने भाग लिया। इनमें पाठ्यपुस्तक लेखक, डी.आई.ई.टी. अध्यापक और मणिपुर की विभिन्न साक्षरता संस्थाओं के प्रतिनिधि भी शामिल थे। इस कार्यशाला में उपस्थित अन्य प्रतिष्ठित संसाधन व्यक्ति थे प्रोफेसर अनीता रामपाल, दिल्ली विश्व विद्यालय, प्रोफेसर राज मोहन, मणिपुर विश्वविद्यालय, श्री श्याम सुंदर (सेवानिवृत्त अपर निदेशक, मणिपुर), श्री कलिता सिमन्ना, सी.ई.ई., गुवाहाटी। इस कार्यक्रम का समन्वय डॉ. खंगेमबम इंदिरा, पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, शिलॉन्ग ने किया।

नैदानिक और उपचारात्मक शिक्षण पर कार्यशाला

प्रारंभिक शिक्षा विभाग द्वारा पांच-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन 28 नवंबर 2007 और 28 मार्च 2008 के बीच किया गया। यह कार्यक्रम रांची, उदयपुर, तिरुपति, पुणे और त्रिपुरा में आयोजित किया गया, जहां कार्य अनुसंधान विधि और नैदानिकी तथा उपचारात्मक शिक्षण के कार्यान्वयन में सर्व शिक्षा अभियान के राज्य और जिला स्तर, एस.सी.ई.आर.टी. / एस.आई.ई., डी. आई.ई.टी. और बी.आर.सी.सी. के व्यावसायिकों का क्षमता निर्माण किया गया। इन सभी कार्यशालाओं में लगभग 35 से 45 अधिकारियों ने भाग लिया। इसमें संबंधित क्षेत्रीय शिक्षण संस्थानों के साथ डी.ई.ई. संकाय सदस्य भी शामिल हुए।

प्रतिभागियों को भाषा, गणित और ई.वी.एस. में नैदानिक परीक्षण की विभिन्न पद्धतियों के बारे में बताया गया और विभिन्न विषयों में नैदानिकी के लिए परीक्षण मदों का विकास किया गया। ये परीक्षण आस-पास के प्राथमिक विद्यालयों में उपयोग किए गए, प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया और सीखने की कमियों वाले बच्चों के लिए सुधारात्मक उपायों के बारे में समूहों के अंदर चर्चा की गई। एन.आई.ई. और आर.आई.ई. के संकाय सदस्यों ने संसाधन व्यक्तियों के रूप में कार्य किया और प्रतिभागियों को कार्य प्रस्तावों के विकास तथा परिष्करण में मार्गदर्शन दिया।

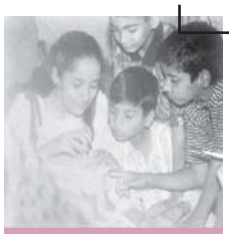

पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों का संशोधन

पाठ्यक्रम सुधार के लिए राज्य सहायता कार्यक्रम के तहत लगभग सभी राज्य / संघ राज्य क्षेत्र एन.सी.एफ. -2005 के प्रकाश में अपनी पाठ्यचर्याओं की समीक्षा और संशोधन करने की प्रक्रिया में हैं। 15 राज्यों ने अपनी मौजूदा पाठ्यचर्याओं की समीक्षा और संशोधन किया है। एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यचर्या समिति और राज्यों के पाठ्यचर्या विकास समूहों के बीच गणित विषय के लिए 5-6 जनवरी 2008 को और 7-8 मार्च 2008 को विज्ञान तथा ई.वी.एस. विषय के लिए अन्योन्य क्रियात्मक कार्यशाला का आयोजन एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली में किया गया।

इस अन्योन्य क्रियात्मक कार्यशाला का दोहरा लाभ हुआ। पहला, इससे राज्य पाठ्यचर्या विकास समूहों को यह समझने में सहायता मिली कि एन.सी.एफ.-2005 किस प्रकार पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों में अनूदित किया गया है। दूसरा, इससे एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यचर्या समितियों को राज्य का दृष्टिकोण समझने और उस प्रक्रिया को जानने में सहायता मिली जिससे राज्य की पाठ्यचर्याओं का विकास किया गया है। राज्य पाठ्यचर्याओं पर प्राप्त फीडबैक राज्यों को दिया गया, जिसे पाठ्यपुस्तकों में शामिल किया जा सके।

सूचना प्रौद्योगिकी आधारित अधिगम संसाधनों पर अभिविन्यास कार्यक्रम

कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग (डी.सी.ई.टी.ए.) द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) साधनों और आई.टी. आधारित अधिगम संसाधनों को पाठ्यक्रम में समेकित करने हेतु विभिन्न राज्यों के अध्यापक प्रध्यापकों के लिए एक 12 दिवसीय राष्ट्रीय अभिविन्यास कार्यक्रम 31 मार्च से 11 अप्रैल 2008 बीच किया गया।

यह कार्यक्रम पाठ्यक्रम में सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों की भूमिका से प्रतिभागियों को परिचित बनाने के लिए और उन्हें वैश्विक सूचनाएं आपस में बांटने की संभावनाओं के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए था। इस कार्यक्रम से कंप्यूटर का उपयोग एक शिक्षण / अधिगम साधन के रूप में करने के लिए सघन अनुभव और अभिविन्यास मिला । प्रतिभागियों ने अपनी विशेषज्ञता, विभिन्न आई.सी.सी. साधनों के समेकन के क्षेत्रों में परियोजनाएं / पाठ योजनाएं विकसित कीं।

शैक्षिक मूल्यांकन में क्षमता निर्माण

मापन एवं मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.) द्वारा प्रश्न पत्र सैट करने पर मणिपुर माध्यमिक शिक्षा मण्डल के मुख्य संसाधन व्यक्तियों के लिए दो क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का आयोजन 28 जनवरी से 1 फरवरी 2008 के बीच इम्फाल में (79 प्रतिभागी) और 11-15 मार्च 2008 कोलकाता में (69 प्रतिभागी) किया गया। गुणवत्तापूर्ण प्रश्नों में सैद्धांतिक विचार विमर्शों के बाद व्यावहारिक सत्र आयोजित किये गये। व्यावहारिक सत्र के दौरान विभिन्न विषयों में प्रश्न बैंकों से उत्कृष्ट गुणवत्तापूर्ण प्रश्न विकसित किए गए।

आवश्यकता आकलन कार्यक्रम

रायपुर, छत्तीसगढ़ में 26 और 27 फरवरी 2008 को दिशा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टेक्नोलॉजी में डी.ई.जी.एस.एन. द्वारा एक दो-दिवसीय आवश्यकता आधारित कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें छत्तीसगढ़ के 10 जनजातीय जिलों के 15 अध्यापकों ने भाग लिया।

उपलब्ध संसाधनों, शिक्षण विधियों और जनजातीय बच्चों के ज्ञान आदि मुद्दों पर प्रतिभागियों के साथ विस्तार से चर्चा की गई और इसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों, एस.सी.ई.आर.टी. और एन.सी.ई.आर.टी. संकाय के विशेषज्ञों ने भाग लिया। इनका फोकस शिक्षण अधिगम सामग्रियों, शिक्षण कार्यनीतियों और सीखने की जरूरतों के साथ स्थानीय भाषा और संस्कृति के संदर्भ पर था।

प्रशिक्षण से संबद्ध निम्नलिखित मुद्दों की पहचान की गई -

- ❐ कक्षाकक्ष शिक्षण में स्थानीय भाषा का उपयोग
- ❐ मूल्यांकन की प्रक्रिया के पारंपरिक तरीके में बदलाव
- ❐ कमजोर छात्रों के लिए उपचारात्मक शिक्षण और उदारवादी मनोवृत्ति

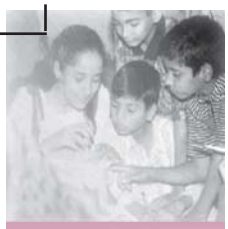

अभिविन्यास कार्यक्रम

दृश्य और श्रव्य पटकथाओं का विकास

सी.आई.ई.टी. ने 10-14 मार्च 2008 के दौरान उच्च प्राथमिक चरण पर विभिन्न पाठ्यक्रम क्षेत्रों में दृश्य पटकथाओं का विकास एस.आई.ई.टी.- पुणे, महाराष्ट्र में किया, जिसमें छत्तीसगढ़, गुजरात, गोवा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश के 28 अध्यापकों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य विज्ञान, गणित , सामाजिक विज्ञान, अंग्रेज़ी और हिंदी में पट कथा लेखन हेतु अध्यापकों की क्षमता का विकास करना था।

अध्यापकों को विशेषज्ञों, फिल्म निर्माताओं जैसे श्री प्रभाकर पिंडारकर, पुणे और सुश्री संध्या रायते, मुंबई द्वारा विभिन्न सत्रों में पट कथा लेखन के कौशलों में प्रशिक्षण दिया गया। बाद में उन्होंने शैक्षिक ऑडियो, वीडियो और मल्टी मीडिया कार्यक्रमों की पट कथाओं का विकास किया।

अभिविन्यास

पूर्वोत्तर राज्यों में 'एन.सी.एफ.-2005 के प्रकाश में सामाजिक विज्ञान शिक्षा को प्रोत्साहन' में मुख्य संसाधन व्यक्तियों के लिए एक चार-दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन 17-20 मार्च 2008 के बीच माध्यमिक शिक्षा मंडल, मणिपुर, इम्फाल द्वारा किया गया। यह कार्यक्रम पूर्वोत्तर राज्यों के केंद्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों और सी.बी.एस.ई. संबद्ध स्वतंत्र विद्यालयों के अध्यापकों के अभिविन्यास हेतु हमारी गतिविधियों में से एक है। इस कार्यक्रम में पूर्वोत्तर क्षेत्र के 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री राज मोहन, सचिव, बी.एस.ई.एम., इम्फाल, इस कार्यक्रम के मानद निदेशक थे, समन्वयक, श्री ख. विजय कुमार सिंह, एन.ई.आर.आई.ई.।

अनुसंधान साधनों पर बैठक

योजना, प्रोग्रामिंग, निगरानी और मूल्यांकन प्रभाग, डी.आई.ई.टी.-नागपुर द्वारा 20-22 फरवरी 2008 के बीच डी.आई.ई.टी. की योजना और प्रबंधन शाखा की भूमिका और कार्यों के अध्ययन के लिए अनुसंधान साधनों को अंतिम रूप देने और आजमाने के लिए राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थानों के सहयोग से एक तीन-दिवसीय बैठक का आयोजन किया गया। अपने आरंभिक उद्बोधन में प्रोफेसर एम. एस. खापरडे, प्रमुख, पी.पी.एम.ई.डी. ने योजना तथा प्रबंधन शाखा के शैक्षिक और प्रबंधन महत्त्व पर प्रकाश डाला। अध्ययन के साधनों को अंतिम रूप दिया गया और आरंभ में उन्हें डी.आई.टी., नागपुर में आजमाया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. डॉक्टर अध्येतावृत्ति 2008

नीचे दिए गए विषयों पर अध्येतावृत्ति प्रदान करने के लिए 8 प्रत्याशियों को चुना गया है :

- डेवलपमेंट ऑफ चिल्ड्रेन्स कंफ्लिक्ट रिज़ोल्यूशन स्ट्रेटज़ीज़, मेघा ढिल्लन, दिल्ली विश्वविद्यालय
- सोशल-कल्चरल डायमेंशन्स ऑफ पीस एजुकेशन इन कंफ्लिक्टिंग ज़ोन : ए केस स्टडी ऑफ कश्मीर, शाहजादा सलीम, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- अटेंशन डेफीसिट हाइपर एक्टिविटी डिर्सोडर : आइडेंटिफिकेशन एण्ड इट्स मेनेजमेंट थ्रू योग एज़ ट्रीटमेंट इंटरवेंशन, भावना माथुर, लखनऊ विश्वविद्यालय
- पेरिंटल एथनोथियोरीज़ एण्ड यंग चिल्ड्रेन्स प्रिपरेशन फॉर स्कूल, प्रभात चंद्र राय, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली
- ए क्लासरूम एप्रोच टू फोस्टर स्किल्स आइडेंटीफाइंग, अंडरस्टेंडिंग एण्ड रिज़ोलविंग कंफ्लिक्स यूज़िंग एप्रोप्रिएट नेगोशिएशन स्ट्रेटज़ीज, श्री विद्या के, वीएचडी, सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ होम साइंस, बैंगलोर
- लैंग्वेज एण्ड नॉलेज क्रिएशन : द पॉलिटिक्स ऑफ मल्टी लिंगुवालिज़्म एण्ड क्लासरूम ट्रांज़ेक्शन, उमी श्री बेदमाता, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर
- ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ डिस्प्लीनरी प्रेक्टिसेज़ एडोप्टिड इन द एलीमेंट्री स्कूल्स विद रिलेशन टू कास्ट, क्लास एण्ड जेंडर, अखिल कुमार राय, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी
- एनवार्यनमेंटल एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट इन सिलेक्टिड अर्बन स्कूल्स ऑफ पांडिचेरी एण्ड कुडालोर, आर अलेक्सेंडर, पांडिचेरी विश्वविद्यालय।

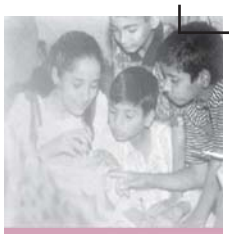

संक्षिप्त समाचार

सामग्री एवं शिक्षा विज्ञान पर प्रशिक्षण

पूर्वोत्तरों राज्यों के मूल संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) हेतु प्राथमिक स्तर पर शिक्षण विज्ञान / ई.वी.एस. के लिए सामग्री एवं शिक्षा विज्ञान पर प्रशिक्षण का आयोजन 25 – 28 मार्च 2008 के बीच किया गया। इसमें 18 प्रतिभागी विद्यालयीन अध्यापकों, डी.आई.ई.टी. कार्मिकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का आयोजन प्रतिभागियों को पर्यावरण संबंधी शिक्षा के बारे में एन.सी.एफ.– 2005 की मूल बातों से अवगत कराने और इन विचारों को अभ्यास में लाने में सहायता देने के लिए किया गया था। इसकी समन्वयक डॉ. रश्मि शर्मा, एन.ई.आर.ई.आई थी।

प्रेरण प्रशिक्षण सामग्री

छत्तीसगढ़ राज्य में प्रारंभिक स्तर पर शिक्षण के लिए नए भर्ती हुए अध्यापकों को दी जाने वाली प्रेरण प्रशिक्षण सामग्री इस कार्यक्रम में तैयार की गई। शिक्षा प्रबंधन, सर्व शिक्षा अभियान, बाल मनोविज्ञान, बाल केंद्रित शिक्षा, मल्टी ग्रेड शिक्षण, मूल्यांकन, भाषा शिक्षण, आदि जैसे बीस महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण मॉडल तैयार किए गए थे। ये मॉड्यूल विचार हेतु राज्य के शिक्षा अधिकारियों के पास भेजे गए।

कार्य अनुसंधान पर अनुवर्तन कार्यशाला

महिला अध्ययन विभाग द्वारा अनुसूचित जाति की लड़कियों के लिए उनके उन्नयन पर केंद्रित एक 5 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला कार्य अनुसंधान पर नवंबर – दिसंबर 2008 के दौरान 4 सप्ताह के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुवर्ती कार्यक्रम के रूप में आयोजन की गई। कार्यक्रम के दौरान स्थानीय विशिष्ट परिस्थितियों में अपने-अपने जिलों में किए गए कार्यों पर 14 प्रतिभागियों (भारत के 11 राज्यों के 13 जिलों से) ने अपने कार्य प्रस्तुत किए।

स्टाफ समाचार

नियुक्तियां

- श्री परमानंद सेठी, व्याख्याता, अर्थशास्त्र, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भोपाल, 16.01.08 को
- श्री धमेन्द्र सिंह, पी.जी.टी., अर्थशास्त्र, डी.एम.एस., क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भोपाल में 08.02.08 को
- श्री प्रमोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक को आशुलिपिक ग्रेड 3 में प्रदोन्नत किया गया।

व्यक्तिगत सहायक के रूप में– सुश्री नेहा भाटिया; श्री नीरज; सुश्री गीता शर्मा; श्री हरीश सप्रा; श्री गौरव गौतम; श्री बिनोद कुमार; श्री ललित कुमार; श्री विजय कुमार

पदोन्नति

- श्रीमती शीला देवी संतोषी, यूडीसी को सहयक के रूप में
- श्री एस. एस. शोरे, एलडीसी को यूडीसी के रूप में
- श्री आर. एस. पंवार, एलडीसी को यूडीसी के रूप में
- श्री पूरन सिंह, एलडीसी को यूडीसी के रूप में
- श्री राकेश अग्रवाल, एलडीसी को यूडीसी के रूप में
- श्री सोहनलाल कुकरेती, सहायक को अनुभाग अधिकारी के रूप में
- श्री मोहम्मद सलीम, अवर सचिव को उप सचिव के रूप में
- श्री ए. डी. राहते, अवर सचिव, पी.एस.एस.सी.आई.वी.एस. को उप सचिव के रूप में

सेवानिवृत्ति

- श्री के. एस. सहायक मुख्य अध्यापक, डी.एम. स्कूल्स, आर.आई.ई., मैसूर 31.01.08 को सेवानिवृत्त
- श्री डी डी यादव, भृत्य 29.02.08 को सेवानिवृत्त
- श्री गबर सिंह कथाइट, पैकर 31.03.08 को सेवानिवृत्त
- श्री दरयाव सिंह, पैकर 31.03.08 को सेवानिवृत्त
- श्री सोमेश्वर गोगोई, ए.पी.सी. एन.ई.आर.आई.ई., शिलॉन्ग से सेवानिवृत्त
- श्री ओ पी सिंह, यू.डी.सी. सी.आई.ई.टी. से सेवानिवृत्त
- श्रीमती कमलेश गुलाटी, अनुभाग अधिकारी आर.आई.ई. अनुभाग से सेवानिवृत्त
- श्री कृष्ण कुमार, अनुभाग अधिकारी, आर एण्ड आई अनुभाग से सेवानिवृत्त

शोक संदेश

परिषद को श्री राम प्रकाश, सफाई वाला के दुखद निधन पर हार्दिक दुख है, जिनका देहावसान 20.03.08 को हो गया।

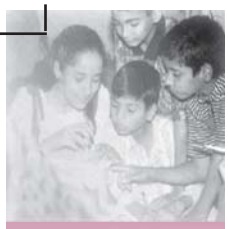

नए प्रकाशन

1. प्राथमिक अध्यापक – अक्तूबर, 2008
2. जनरल ऑफ वेल्यू एजुकेशन – जनवरी–जुलाई 2004
3. सिक्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च 1993–2000
4. ऑल इंडिया कॉम्पीटिशन ऑफ इनोवेटिव प्रेक्टिस एण्ड एक्सपेरीमेंट इन एजुकेशन फॉर स्कूल एण्ड टीचर्स एजुकेशन इंस्टीट्यूशन – इनफॉरमेशन बुलिटेन
5. स्कूल साइंस – मार्च 2008
6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 – सामाजिक विज्ञान का शिक्षण 1.5
7. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 – सामाजिक विज्ञान का शिक्षण 2.1
8. ईआरआईसी – शिक्षा अनुसंधान और नवाचार समिति – शोभा प्रस्तावनों का प्रस्तुतीकरण के लिए दिशानिर्देश
9. मीटिंग स्पेशल नीड्स इन स्कूल – ए मेनुअल
10. इंडियन एजुकेशन अबस्ट्रक्ट – जुलाई 2006
11. ताला की अलवर यात्रा
12. द मेजिक ऑफ इनोवेस
13. सेवंथ ऑल इंडिया स्कूल एजुकेशन सर्वे – स्पेसिफिक फेसिलिटि्ज इन सेकंडरी एण्ड हाइयर सेकंडरी स्कूल
14. रिसोर्स एण्ड डेवलपमेंट – जॉगरफी फॉर कक्षा VIII

गुरुवार व्याख्यान मंच

एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली में डी.ई.आर.पी.पी. द्वारा निम्नलिखित व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

- ‘एसेसमेंट फॉर अंडरस्टेडिंग–मल्टीपल इंटेलिजेंस’, विषय पर प्रोफेसर सी ब्रान्टन शियरर द्वारा 10.01.08 को।
- ‘मेनेजिंग इग्ज़ामिनेशन स्ट्रेस टू एटेन सक्सेस’, डॉक्टर वीर पाल सिंह, डी.ई.एम.ई, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा 17.01.08।
- ‘फ्यूचर रोल ऑफ इंटेलेक्चुअल्स इन मॉर्डन इंडिया’, प्रोफेसर स्वामी बुद्धानंद, पूर्व में यू.एन.के. साथ कार्यरत, 31.01.08 को।
- ‘मेथड ऑफ टीचिंग–लर्निंग कंस्ट्रक्टीविज़्म’, श्री एस एस भान, वरिष्ठ अभियंता, जम्मू द्वारा 21.02.08 को
- कमिटमेंट टू एक्सीलेंस डॉक्टर, अंजिली प्रकाश, अध्यक्षा, एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया द्वारा 13.03.08 को

पिछला हाशिया

अध्यापक प्रशिक्षण के ऐसे कुछ ही कार्यक्रम हैं जो बच्चों को मनोविज्ञान के सैद्धांतिक ज्ञान के आधार पर स्वतंत्रत रूप में गहराई से चिंतन को प्रोत्साहन देते हैं। अधिकांश प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बाल मनोविज्ञान को एक किनारे रख दिया जाता है और इसे कुछ निश्चित कानूनों का पुलिंदा तथा चरणवार विकास की जानकारी समझा जाता है। कुछ नए अध्यापकों को अपने सैद्धांतिक ज्ञान को लागू करने का अवसर यह समझाने पर मिला है कि उनके आस पास अलग–अलग आयु समूह के बच्चे मौजूद हैं। एक चार वर्षीय प्रारंभिक शिक्षा स्नातक पाठ्यक्रम (बी. ईएल. एड) जो इस मार्ग को बढ़ावा देता है, लगभग एक दशक से डेढ़ दशक के पहले दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आरंभ किया गया था। इस कार्यक्रम के तहत कुछ सौ अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया और जिन्होंने राजधानी के विद्यालयों में अपनी पहचान बनाई है। जब विद्यालयों के प्रधानाचार्य इन अध्यापकों की कार्यशैली को देखते हैं तो वे अन्य कार्यक्रमों के तहत प्रशिक्षित और इन कार्यक्रमों के अध्यापकों के बीच अंतर पहचान सकते हैं। एक मूलभूत अंतर यह है कि बी.ई.एल. एड कार्यक्रम से शैक्षिक सिद्धांत के साथ ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने के लिए एक गहरी छाप बनती है। परंतु एक अन्य गहरा अंतर प्रशिक्षुओं को जो बच्चों के जीवन और उनकी गतिविधियों के पर्यवेक्षण, समझ और विश्लेषण के अनेक अवसरों के दिए जाने के कारण उभरता है। विशेष रूप से बच्चों को उनके घरों तथा आस पड़ोस में इसकी व्यापकता का अवसर देने के लिए अध्यापक उस अंतर्दृष्टि का उपयोग करते हैं क्योंकि विद्यालय की कक्षाएँ बच्चों के जीवन के केवल एक पहलू है जिसे उनके अनुभवों के अपेक्षाकृत बड़े संदर्भ से अलग करके नहीं देखा जा सकता है।

एन.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट

एन.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट को पुनः डिजाइन किया गया है जिसे इन पर देखा जा सकता है।

प्रकाशन मंडल

पी. राजाकुमार
नीरजा रश्मि
श्वेता उप्पल
रेखा अग्रवाल
अरुण चितकारा

वेबसाइट: www.ncert.nic.in
ई–मेल: publica@nda.vsnl.net.in

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा लेज़र टाइपसेट इनहाउस एवं गीता ऑफ़सेट प्रिंटर्स, सी–90, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेस–1, नयी दिल्ली 110 020 में मुद्रित।